तृतीय अध्याय

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का कथ्य-पक्ष

तृतीय अध्याय

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का कथ्य-पक्ष

3.0 भूमिका

औद्यौगिकीकरण, वैज्ञानिक विकास, शिक्षा का प्रचार-प्रसार, यातायात के साधनों की सुविधा, पाश्चात्य जगत से हमारा संपर्क जैसे कारक आधुनिक भारत की महत्त्वपूर्ण घटनायें है । इन घटनाओं का व्यापक असर हमारे समाज एवं साहित्य पर पड़ा है । वैसे तो साहित्य का कथ्य पक्ष प्राचीन काल से ही महत्त्वपूर्ण था । संस्कृत साहित्य इसका ज्वलंत उदाहरण है, जहाँ संदेश, सबक, सीख, नीतिपरक, सुक्तिपरक, मूल्यपरक जैसे आधारभूत कथ्य विद्यमान है । हिन्दी का समकालीन उपन्यास अपने समय की समस्याओं और चुनौतियों के साथ संघर्ष करते हुए समाज की वास्तविक स्थिति को निरूपित करता है । यह अपने समय के यथार्थ का अनावरण करता है एवं मानव विरोधी चिंतन का प्रतिरोध कर मानवोचित जीवन जीने के अधिकारों का समर्थन करता है । समकालीन उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में स्त्री जीवन, दलित जीवन, लोक जीवन, आदिवासी जीवन जैसे भिन्न-भिन्न आयामों को स्पष्ट रूप से उजागर करते हुए उपयुक्त पात्रों एवं परिवेशों का चयन किया है । उपयुक्त पात्रों एवं परिवेश के चयन से घटनाओं का चित्रण मानो सजीव हो उठता है । इन्हीं विशेषताओं के कारण साहित्य जगत में समकालीन उपन्यास अपना विशिष्ट स्थान रखता है । किन्तु समकालीन हिन्दी साहित्य में पाश्चात्य शासन, साहचर्य एवं साहित्य ने हमें उसमें और निखार लाने का अवसर दिया है । हिन्दी की

समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यास साहित्य में इस धर्म को बखूबी निभाया है ।

3.1 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में वर्णित पात्र एवं परिवेश

मेहरुन्निसा परवेज का पहला उपन्यास **'आँखों की दहलीज'** का परिवेश जगदलपुर और बुंदेलखंड क्षेत्र के मुस्लिम परिवार का है । इस उपन्यास की प्रमुख पात्रा तालिया के ऊपर लगाये गए बांझपन के आरोप से उपजी निराशा और अन्तर्द्वन्द का वर्णन है । इस पीड़ा से मुक्ति पाने हेतु वह विवाहेत्तर संबंधों की तरफ आकृष्ट होती है और अंततः आत्मग्लानि की शिकार होकर अपनी गृहस्थी सहेली जमीला को सौंपकर रात के अंधेरे में जिन्दगी से पलायन कर जाती है । इस उपन्यास में तालिया की माँ, जमीला आदि प्रमुख स्त्री पात्र एवं शमीम, जावेद, सिद्दीकी साहब आदि पुरूष पात्र हैं ।

मेहरुन्निसा परवेज का दूसरा उपन्यास **'उसका घर'** की मुख्य पात्रा ऐलमा है । ईसाई परिवार की इस पात्रा के माध्यम से लेखिका ने परिवार के बीच चल रहे वैचारिक एवं सांस्कृतिक टकराहट से उपजी परिस्थितियों का चित्रण किया है । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में जिस प्रकार गरीबी, भूखमरी एवं अव्यवस्था का एक दौर शुरू हुआ उससे पढ़ा-लिखा संभ्रान्त वर्ग भी अछूता नहीं रहा । पुराने धनाढ्य परिवारों की बिगड़ती स्थिति, धन की लालसा एवं नवधनाढ्यों की विकृत मनोवृति से तत्कालीन समाज भी अछूता नहीं रहा । जहाँ गरीब, अनाथ बालिकायें अपने जीवन यापन के लिए शरीर का सौदा करने को विवश थी तो वहीं संभ्रान्त परिवार की पढ़ी-लिखी, सुन्दर एवं सुशील लड़की ऐलमा अपने भाई की महात्वाकांक्षाओं को पूरा करने के क्रम में धोखे से आहूजा द्वारा शारीरिक शोषण की शिकार बना दी जाती है । लेखिका ने इस दौर के

पढ़े-लिखे एवं संभ्रांत लोगों के मानसिक पतन को रेखांकित किया है एवं उपन्यास के परिवेश में हिन्दू, आदिवासियों और ईसाईयों के कई प्रकार की शाखाओं का उल्लेख किया है । इस उपन्यास में रेशमा, आंटी, सोफिया आदि स्त्री पात्र एवं जॉन, आहूजा, प्रोफेसर देव, जोसेफ आदि पुरूष पात्र है, जो उपन्यास को विस्तार प्रदान करते हैं ।

मेहरुन्निसा परवेज का तीसरा उपन्यास **'कोरजा'** है । नसीमा इस उपन्यास की मुख्य पात्रा है । यह उपन्यास स्त्रियों के दोहन एवं पुरूषों की स्त्रियों के प्रति नकारात्मक सोच और उसकी विकृत मानसिकताओं को उजागर करता है । इसका परिवेश एक मुस्लिम घराने का है, जो कभी संपन्न हुआ करता था । किन्तु परिवार के मुखिया की चरित्रहीनता और उसकी मृत्यु के उपरांत पारिवारिक बिखराव और उससे उपजी समस्याओं को अपने में समेटे यह उपन्यास मूलतः स्त्रियों की दारूण स्थिति को उजागर करता है । यह जगदलपुर और बस्तर के मुस्लिम समाज का भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थितियों का वर्णन करता है । इस उपन्यास में नानी अरमान बी., साजो खाला, फातमा, रब्बो आपा, मोना दीदी, कम्मो आदि प्रमुख स्त्री पात्र एवं रफीक, शफीक, करीम मियाँ, एहसान, अमित आदि पुरूष पात्र हैं ।

मेहरुन्निसा परवेज का चौथा उपन्यास **'अकेला पलाश'** की मुख्य पात्रा तहमीना है । उपन्यास का परिवेश बस्तर क्षेत्र के एक शिक्षित मुस्लिम परिवार का है, जिसमें पिता की अय्याश प्रवृति के कारण माँ ने अपनी सुरक्षा के लिए तहमीना की शादी उसके पिता के मित्र से जबरन करा दी । इस निरस वैवाहिक जीवन के कारण उसके जीवन में भटकाव आता है किन्तु अपनी चेतना के कारण उससे मुक्त हो कर समाज में अपनी विशिष्ट छवि बनाने में कामयाब

होती है । इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने तथाकथित सभ्य, शिष्ट एवं शिक्षित समाज में व्याप्त औरतों का शारीरिक एवं मानसिक शोषण का चित्रण किया है । इस उपन्यास में डॉ. नाहिद, नीलिमा भाभी, मीनाक्षी, विमला आदि प्रमुख स्त्री पात्र एवं रिंकु, जमशेद, तुषार, विपुल आदि पुरूष पात्र हैं ।

मेहरुन्निसा परवेज का पांचवा उपन्यास **'समरांगण'** है, जिसका परिवेश सन् १८५७ ई॰ की क्रांति और उससे उपजी दिल्ली में मारकाट एवं हिंसा का है । यह वस्तुतः एक परम्परावादी पंडित की जीवन कथा है जो दंगों के दौरान दिल्ली से पलायन करते हुए कश्मीर की जगह जबलपुर आ पहुँचा था । यहाँ उसका परिचय अंग्रेजों एवं अंग्रेजी सभ्यता से हुआ, जिसने उसकी जीवन दृष्टि बदल दी । वह अंग्रेजों का विश्वासपात्र बन कर अपने ही समाज के लिए घातक बन गया । किन्तु जब अंग्रेजों द्वारा एक साजिश के तहत उसके बेटे मोहनलाल पर प्राणघातक हमला किया गया, तब उसे अपनी गलतियों का एहसास हुआ । इस उपन्यास में सुहासिनी, लता, बूँदाजान, पृथादेवी, चंद्रप्रभा, चंद्रकला आदि स्त्री पात्र एवं बंगाली सिंह, मिट्ठू सिंह, मोहन, डॉ॰ नजीर अहमद आदि पुरूष पात्र है ।

मेहरुन्निसा परवेज का छठा उपन्यास **'पासंग'** की मुख्य पात्रा कनी है । उपन्यास का परिवेश बस्तर क्षेत्र के मुस्लिम परिवारों का है । कनी की दादी बुलाकी बेगम का अपने जवान बेटे की आकस्मिक मृत्यु एवं पुत्रवधू की दूसरी शादी के उपरांत अपनी अबोध पोती के परवरिश के क्रम में आए संघर्षों का वर्णन है । इस उपन्यास में माता-पिता के प्यार से वंचित कनी के बाल मन में अपनी माँ के प्रति उत्सुकता, बाहरी दुनियाँ के प्रति उसकी अनभिज्ञता एवं मुस्लिम परिवारों के रीति-रिवाजों का सजीव चित्रण है । इस उपन्यास में दादी

बुलाकी बेगम, जैनब दादी, सुगराबी, बानो आपा, कुलसुम, सावरा आदि स्त्री पात्र एवं सादिक, रशीद चचा, दिलशाद भाई, गणपत काका, गौसू दादा आदि पुरूष पात्र हैं ।

3.1.1 उपन्यासों में वर्णित पात्रों का विद्रोह

समाज में लोगों का विद्रोह सामान्यतः अन्याय, अत्याचार, अनाचार, अव्यवस्था, असामाजिकता और अनैतिकता के विरुद्ध होता है । किन्तु सही मायने में लोगों के ज्ञान एवं स्वाभिमान के कारण ही विद्रोह की प्रवृति पनपती है । जहाँ सामान्य कथन से अपेक्षित परिवर्तन नहीं दिखाई देता, वहाँ आक्रामकता एवं कटु शब्दों द्वारा अपनी मान्यता स्थापित करनी पड़ती है । मेहरून्निसा परवेज के उपन्यास **'आँखों की दहलीज'** में पौत्र प्राप्ति की लालसा में उचित - अनुचित की सीमा लांघती तालिया की माँ से तालिया का विद्रोह करना, **'उसका घर'** उपन्यास में रेशमा का देव के लिए अपनी माँ से विद्रोह करना, रेशमा की माँ की मृत्यु पर ऐलमा का अपने भैया से विद्रोह करना, **'अकेला पलाश'** उपन्यास में डॉ॰ नाहिद द्वारा अपने परिवार से विद्रोह कर शादी करना जैसी घटनायें है । इन सभी उपन्यासों में पात्रों का विद्रोह मुखरित हुआ है ।

3.1.2 उपन्यासों में वर्णित सामाजिक परिवर्तन के विविध रूप

परिवर्तन संसार का नियम है ।साहित्य भी इससे अछूता नहीं है । हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला के उपन्यास साहित्य में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के भिन्न-भिन्न पहलुओं को अभिव्यक्त किया गया है । आज की युवा पीढ़ी अपने लिए स्वयं नई जमीन की तलाश कर रही है । मेहरून्निसा परवेज के उपन्यास **'उसका घर'** की ईसाई युवती रेशमा एक

हिन्दू युवक देव से प्यार करती है । देव एक कॉलेज का प्राध्यापक है । रेशमा अविवाहित है, किन्तु देव के बच्चे की माँ है । रेशमा और देव को अपने धर्म और समाज की कोई परवाह नहीं है । रेशमा की माँ को यह संबंध स्वीकार नहीं है । ऐलमा के समझाने पर वह कहती है, "किसी भी ढ़ोर-चमार से वह बच्चा जन्मा कर आ जाय तो क्या उसे मैं दामाद मान लूँ ? कभी नहीं ! उसे मेरी पसंद के लड़के से विवाह करना होगा, वरना नहीं ।"[1] एक दिन रेशमा को उसकी माँ कहती है, "तेरा कौन विश्वास करेगा, क्या कुवांरी माँ के बेटी को समाज स्वीकारेगा ? कभी नहीं, तेरी बच्ची को समाज कभी नहीं स्वीकारेगा !"[2] किन्तु रेशमा सहज होकर जबाब देती है कि तुम्हें इसकी चिंता करने की कोई जरुरत नहीं है । मुझे समाज की कोई परवाह नहीं है । क्या मदर मरियम के बेटे को नहीं स्वीकारा था ? **'आँखों की दहलीज'** उपन्यास की नायिका तालिया विवाहित है । पति भी सुन्दर और अच्छे विचारों वाला है । किन्तु तालिया दूसरे पुरुष जावेद की ओर आकर्षित होकर शारीरिक संबंध बना लेती है । **'कोरजा'** उपन्यास की मोना पैंतीस साल की होने पर भी अविवाहित है क्योंकि जिससे वह प्यार करती थी, उसका निधन हो गया । अब वह अपने घर में ही स्कूल चलाकर समाज में एक मिसाल कायम करती है ।

'अकेला पलाश' उपन्यास का पात्र विपुल एक होनहार नवयुवक है । पढ़ा-लिखा होने के बावजूद भी वह बेरोजगार है । जिन्दगी के कठिन संघर्षों को स्वीकार कर वह काफी परिश्रम करता है । जब उसे नौकरी मिलती है, तब

---

1. परवेज, मे॰ *उसका घर.* पृ. 33.
2. परवेज, मे॰ *उसका घर.* पृ. 34.

वह एक परित्यक्ता नारी को उसके दो बच्चों के साथ अपना लेता है ।

'समरांगण' उपन्यास के नायक पं॰ गोपीलाल एक सदाचारी एवं पारंपारिक कश्मीरी ब्राह्मण है । उसे जबलपुर में अंग्रेजों के सैनिक छावनी में सब्जी पहुँचाने का ठेका मिलता है । अंग्रेजों के संपर्क में आने के बाद वह पाश्चात्य संस्कृति से इस तरह प्रभावित होता है कि अपने नैतिक मूल्यों की तिलांजलि देकर चारित्रिक पतन के गर्त में चला जाता है ।

3.1.3 उपन्यासों में वर्णित जीवन की वास्तविकता और जीवन मूल्य

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश की सामाजिक और राजनीतिक माहौल में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है **।** इस बदले माहौल में जिस वास्तविकता को उपन्यासकारों ने अनुभव किया है**,** उस वास्तविकता को उसने समकालीन उपन्यासों में ईमानदारी से रेखांकित किया है । **'आँखों की दहलीज'** उपन्यास में लेखिका ने मुख्य पात्रा तालिया के माध्यम से नारी मन के अन्तर्द्वन्द को यथार्थ परक दृष्टिकोण से उजागर किया है । तालिया की दोस्त जमीला अपने प्यार को पाने के लिए काफी संघर्ष करती है, किन्तु अपने परिवार के दायित्वों का निर्वहन करने के कारण अपने प्यार को पाने में असफल रहती है । **'कोरजा'** उपन्यास में मुस्लिम परिवार में औरतों का शोषण खुद परिवार के लोग ही किस तरह करते हैं, इसका ज्वलंत उदाहरण रहमान खाँ है । सौतेली माँ के निष्ठुर व्यवहार से रब्बो का जीवन बर्बाद हो जाता है, यह समाज की वास्तविकता है । **'उसका घर'** उपन्यास में ऐलमा और रेशमा द्वारा लिया गया स्वतंत्र निर्णय समकालीन समाज की यथार्थपरक घटनायें हैं ।

3.1.4 उपन्यासों में वर्णित अधिकारोन्मुख विचार

भारतीय संविधान द्वारा सभी नागरिकों को समान अधिकार दिया गया हैं । शिक्षा के कारण लोगों में अपने अधिकारों के प्रति चेतना में वृद्धि हुई है । समकालीन परिवेश में अधिकारों की चेतना ने व्यक्ति और समाज को प्रभावित किया है । फलतः समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों ने भी अपने उपन्यासों में इन अधिकारों को बतलाने तथा जतानेवाले कथ्यों का समावेश किया है । वस्तुतः अधिकारों की ओर ले जानेवाला कथ्य ही अधिकारोन्मुख विचार है । सही मायने में ऐसे ही विचार साहित्य को गरिमा प्रदान करते हैं । **'आँखों की दहलीज'** उपन्यास में जमीला निम्न मध्यम वर्गीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है । उसका संघर्ष एवं विचार उसके अधिकारोन्मुख विचारों को दर्शाता है । उपन्यास **'उसका घर'** में सोफिया, रेशमा और ऐलमा द्वारा किया गया संघर्ष नारी के अधिकारोन्मुखता को प्रदर्शित करता है । **'समरांगण'** उपन्यास का कथा परिवेश ब्रिटिशकालीन भारत का है । अपने अधिकारों के लिए कांग्रेस में सम्मिलित होना, पृथा के भाई को अंग्रेजों द्वारा फांसी दिया जाना, डॉ॰ अहमद को अंग्रेजों द्वारा गोली मार देना जैसे अनेक घटनायें है जिसमें अधिकारोन्मुखता को उपन्यास का हिस्सा बनाया गया है । **'पासंग'** उपन्यास में कनी की दादी हमेशा अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहकर अकेले ही अपने परिवार की रक्षा करती है । वह कहती है, "औरत को अपनी हैसियत कभी खोने नहीं देना चाहिए । औरत जिन्दगी से लाचार-बेजार होकर हालात की कठपुतली बनकर रह जाती है । उसे हर दल-दल से बाहर आने का रास्ता ढूँढ़ना चाहिए ।"[1]

---

1. परवेज, मे॰ *पासंग.* पृ. 298.

3.1.5 उपन्यासों में वर्णित ऐतिहासिकता एवं राष्ट्रीयता

समकालीन परिवेश में वास्तविक स्थितियों का महत्त्वपूर्ण योगदान है । किन्तु ऐसे परिवेश के बावजूद भी हिंदी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों ने ऐतिहासिक विषयों तथा तत्संबंधी तथ्यों को अपने कुछ उपन्यासों में समाहित कर सामाजिक एवं यथार्थपरक विषय के वर्णन के लिए आवश्यकता के अनुरुप इतिहास की याद दिलानेवाले प्रसंगों, घटनाओं, संदर्भों और विचारों को कथ्य बनाया है । स्वाधीनता आन्दोलनों के फलस्वरुप हमारे देश में राष्ट्रीय विचार धारा का सूत्रपात हुआ । इसी परिवेश में साहित्य में भी राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत विचारों का प्रादुर्भाव हुआ । सन् १९६२ ई. में चीन से, सन् १९६५ ई. और सन् १९७१ ई. में पाकिस्तान से हुए युद्धों ने एवं उसके बाद देश के कई भागों में अलगाववादी आन्दोलनों और उग्रवाद की घटनाओं ने साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना को बल प्रदान किया । फलतः हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में भी राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रीय संवेदनाओं को प्रखरता से उभारा गया है । **'उसका घर'** उपन्यास में लेखिका ने ईसाई धर्म के विभिन्न पंथों - रोमन कैथोलिक, प्रोटेस्टेन्ट, फिलेडेल्फिया, पेंटाकोस्टल आदि के बारे में ऐतिहासिक जानकारी देकर अपने विचार रखे हैं कि व्यक्ति किस तरह आपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए धर्मों एवं विभिन्न पंथो का दुरुपयोग करता है । ऐलमा का भैया एक ऐसा पात्र है, जो पादरी के निवास स्थल को अपनी व्यक्तिगत संपत्ति मानता है । जब उसके समाज के लोगों द्वारा पादरी का निवास स्थल खाली करने का दबाब डाला जाता है तो वह अपना पंथ ही बदल लेता है । **'समरांगण'** उपन्यास के कथानक में १८५७ ई॰ के आसपास की घटनाओं का परिवेश है । इसमें अंग्रेजों एवं मुगलों का संघर्ष, सिपाही विद्रोह, समाज की मानसिकता और लोगों के जीवन संघर्ष एवं

उनके संवादों का समावेश है । आमलोगों की धारणा थी- "अंग्रेजों के गुप्त चालों को भला कौन जान सकता है?"[1] **'पासंग'** उपन्यास में कनी और उसकी दादी में तीन पीढ़ियों का वैचारिक अंतर है । जहाँ एक ओर कनी आधुनिक परिवेश में अपनी जिन्दगी के अनुभवों से कुछ सीख रही है, वहीं दूसरी ओर दादी चलती-फिरती इतिहास की एक पुस्तक जैसी हैं । उन्हें शहर के प्राचीन इतिहास, आदिवासियों के रहन- सहन एवं जीवन शैली की जानकारी है । दादी के इन अनुभवों से कनी को बहुत कुछ सीखने समझने की शक्ति आई है । समकालीन परिवेश में राष्ट्रीय विचार एवं राष्ट्रीयता को लेकर खासकर समाज की एकता बनाए रखने के लिए मेहरुन्निसा के कई उपन्यास है । **'पासंग'** उपन्यास में कनी की दादी कहती हैं कि गलत लोगों और गलत बातों का कभी भी साथ नहीं देना चाहिए । ऐसे लोग कच्ची रोकड़ होते हैं जिन्हें जरा सा झटका लगा और सिलाई उघर जाती है । "धर्म की नींव पर रखा राज्य हमेशा खोखला होता है । उसकी व्यवस्था कभी नहीं सुधर सकती, धर्म आस्था के लिए है, व्यवस्था के लिए नहीं होता । इतनी छोटी सी बात भी लोग नहीं समझते । जब एक होकर अंग्रेजों से लड़ सकते हैं, तो एक होकर देश क्यों नहीं चला सकते ।"[2] **'समरांगण'** के पात्र डॉ॰ अहमद के अनुसार घर-गृहस्थी की लड़ाई में तो सारी दुनियाँ लगी रहती है । रोज बच्चों का जन्म होता है, शादी होती है और एक दिन वह मर जाता है । "देश के लिए काम करें तो वही सही मौत है ।"[3]

3.1.6 उपन्यासों में वर्णित मानवीय चेतना एवं वैचारिकता

चेतना जीवंतता की निशानी है । चेतन पुरुष संवेदनशील,

---

1. परवेज, मे॰ *समरांगण.* पृ. 24.
2. परवेज, मे॰ *पासंग.* पृ. 106.
3. परवेज, मे॰ *समरांगण.* पृ. 321.

सावधान और सचेत होता है । मानवीय चेतना से तात्पर्य उन कथ्यों से है, जो सचेतन है, सतर्क है, बुद्धि और विवेकपूर्ण है । वस्तुतः साहित्य में चेतना उन्मुख विचारों का आगमन साहित्य के उद्भव काल से ही है । साहित्य का सृजन ही साहित्यकार के चेतना का परिणाम है । हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में भी मानवीय चेतना एवं वैचारिकता का संतुलित समावेश है । **'उसका घर'** उपन्यास में ऐलमा का मद्रास जाना, रेशमा का अपनी माँ के साथ वैचारिक मतभेद, सोफिया द्वारा अपने जीवन-यापन के लिए अपना रोजगार करना आदि, ये सभी घटनायें एक ऊर्ध्वगामी सामाजिक जीवन की हिमायत करते हैं । **'कोरजा'** उपन्यास की पात्रा रब्बो के जन्म के समय ही माँ मर गई । पाँच साल की उम्र में पिता का भी देहान्त हो गया । सौतेली माँ का व्यवहार अच्छा नहीं था । सौतेली माँ के रिश्ते के एक भाई ने उसे गर्भवती बना दिया एवं बच्चा मृत पैदा हुआ । रब्बो के अतीत से परिचित एहसान नामक पात्र उससे प्यार करता था, परन्तु शादी नहीं कर पाया । फलतः रब्बो की शादी दूसरी जगह तय हो गई । रब्बो की परिस्थिति को देखते हुए एहसान ने चुपचाप कम्मो के माध्यम से शादी का सारा इंतजाम किया ताकि रब्बो की शादी धूमधाम से हो सके ।

'समरांगण' उपन्यास की नौटंकीवाली बूंदाजान पं॰ गोपीलाल के दो बच्चों की माँ बन गई । जब उसे यह अहसास हुआ कि उसके बच्चों को कोई सामाजिक मान्यता नहीं मिलेगी, तो वह अपने बच्चों के भविष्य के लिए गोपीलाल से सारे संबंध तोड़कर बंबई चली गई । **'अकेला पलाश'** उपन्यास की तहमीना पति की उदासीनता से दुःखी होकर सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहती है । अधिकारी के रुप में वह कर्मठ और ईमानदार है । अपने अधीनस्थ कर्मचारियों पर रोब गाँठने के बजाय दिशा निर्देश देती है । उत्पीड़ित महिलाओं

की समस्याओं को सहानुभुतिपूर्वक सुलझाती है । अपने अस्तित्व को बचाने के लिए सामाजिक एवं घरेलू कार्यों का निर्वहन एक समान करती है ।

3.1.7 उपन्यासों में वर्णित आदर्श एवं यथार्थ का समन्वय

आदर्श एवं यथार्थ का समन्वय साहित्य का स्थायी भाव है । सभी भाषाओं के साहित्य में इसकी प्रवृति समाहित है । समकालीन परिवेश वस्तुतः मोहभंग का परिवेश है । अतः चारों ओर से निराश, हताश, दुःखी एवं दिग्भ्रमित व्यक्ति और पूरे समाज को आदर्श और यथार्थ के समन्वय से लाभान्वित करना हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों का भी दायित्व है, जिसे उनलोगों ने ईमानदारी से निभाने का प्रयास किया है । प्रायः अपने सभी उपन्यासों में मेहरून्निसा परवेज ने आदर्श एवं यथार्थ का समन्वय स्थापित किया है, जिसके मूल में व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना, वैध-अवैध का बोध कराना, सत्-असत् की पहचान कराना, स्वीकार-अस्वीकार्य की दृष्टि देना आदि बातें हैं । **'आँखों की दहलीज'** उपन्यास में तालिया की आत्म ग्लानि, शशि की असफल प्रेम कहानी, **'उसका घर'** उपन्यास में अपने भाई द्वारा ऐलमा के सौन्दर्य का सौदा करना, रेशमा का निर्भिक बन परिवार एवं समाज को चुनौती देना, **'कोरजा'** उपन्यास में गर्भवती रन्नो का विवाह होना, जुम्मन द्वारा अपनी बेटी जैसी साजो से हवसपूर्ति करना, **'समरांगण'** उपन्यास में गोपीलाल का हृदय परिवर्तन, पृथा देवी द्वारा किया गया संघर्ष, **'पासंग'** उपन्यास में कनी के दादी का व्यवहार, बानोआपा द्वारा चुपचाप हर गम को बर्दाश्त करना आदि घटनायें आदर्श एवं यथार्थ के समन्वय को स्थापित करता है ।

3.1.8 उपन्यासों में वर्णित वैश्विकता :

विश्व के बारे में चिंतन-मनन, सोच-समझ तथा विवेचन-विश्लेषण करने वाले कथ्य को वैश्विकता का विचार कहा जाता है । जातिवाद, साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता, तथा संकुचित राष्ट्रवाद की मानसिकता से ऊपर उठकर समूचे संसार को एक परिवार मानने का दर्शन ही 'वसुधैव कुटुम्बकम' है । बीसवीं सदी के दो भयंकर विश्व युद्ध की विभिषिकाओं को देखते हुए 'जीयो और जीने दो' के दर्शन को बल मिला है । मानव प्रेम का महत्त्व और विश्व-बंधुत्व की संकल्पना जैसे तत्व वैश्विकता के विचारों को जन्म देने वाला कारक है । हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में भी वैश्विकता के विचार समाहित है । मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'पासंग'** के पात्र सादिक के अनुसार कणों में सहेजी, अकेली चीजें एक दिन बिखर जाती है, लेकिन एक जुट होकर वही पत्थर की तरह हो जाती हैं, पहले तो यह महसूस होता है कि हाथ आया भी तो क्या पत्थर ? पर सोचने पर हम पाते हैं कि पत्थर तो ताकत है । पत्थर को तो हम आसानी से हाथ में पकड़ सकते हैं और दूर तक निशाना साध सकते हैं । यह गिर नहीं सकता । "कणों में तो बिखराव था, पर पत्थर में तो एक जुटता है ।"[1] **'समरांगण'** उपन्यास के पात्र डॉ॰ अहमद के अनुसार " मैंने हिंदी, उर्दू, अरबी, अंग्रेजी और फारसी सभी जुबानें पढ़ी है, तभी तो आर्तनाद और मुक्तनाद का भेद समझ पाया हूँ ।"[2] आदमी दुःख के ताल में डूबकर ही स्वतंत्रता का विस्तार समझ पाता है । अतः जैसे चावल की कनकी जल्दी से दाल के साथ पक कर खिचड़ी बन जाती है, वैसे ही हमारा दूसरों के साथ जुड़ाव वैश्विकता की भावना को बल प्रदान करेगा ।

1. परवेज, मे॰ *पासंग.* पृ. 345.
2. परवेज, मे॰ *समरांगण.* पृ. 324.

3.2 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में वर्णित पात्र एवं परिवेश

नासिरा शर्मा का पहला उपन्यास **'सात नदियां : एक समन्दर'** उपन्यास की प्रमुख पात्रा तय्यबा है । उपन्यास का परिवेश एवं पृष्ठभूमि ईरान की इस्लामिक क्रांति का है । लेखिका के सामने शाह का ध्वस्त शासन था । शाह का विरोध और खुमैनी के आगमन से हुई क्रांति ने ईरान की व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया था । किन्तु यह परिवर्तन क्षणिक था । खुमैनी के शासन व्यवस्था में इस्लामिक कट्टरवादियों को प्रश्रय मिलने लगा जिसके कारण उदारवादियों पर अत्याचार बढ़ गया । लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम से युद्ध की विभिषिका से उत्पन्न विध्वंस एवं विनाश का चित्रण करते हुए, मानवता की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए ऐसे प्रजातांत्रिक समाज की व्याख्या की है, जहाँ स्त्री और पुरूष के समान अधिकार हो । इस उपन्यास में तय्यबा की छः सहेलियाँ मलीहा, सनोवर, परी, सूसन, महनाज और शहनाज आदि मुख्य स्त्री पात्र एवं हुसैन, अब्बास, कुरूश, असलम, सुलेमान आदि मुख्य पुरूष पात्र हैं ।

नासिरा शर्मा का दूसरा उपन्यास **'शाल्मली'** की मुख्य पात्रा शाल्मली शिक्षित माता-पिता की इकलौती संतान है । इसका परिवेश दिल्ली के एक मध्यम वर्गीय हिन्दू परिवार का है । शाल्मली अपनी लगन और प्रतिभा के कारण एक प्रशासनिक अधिकारी बन जाती है । उसका क्लर्क पति नरेश हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है तथा अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए वह शाल्मली को तरह-तरह से प्रताड़ित कर दाम्पत्य जीवन दूभर बना लेता है । इस उपन्यास में श्यामल, सरोज, बेला, मिसेज खन्ना आदि स्त्री पात्र एवं राकेश, किशोरीलाल आदि पुरूष पात्र हैं ।

नासिरा शर्मा का तीसरा उपन्यास **'ठीकरे की मंगनी'** की मुख्य पात्रा महरूख है । इस उपन्यास का परिवेश बस्ती का एक परंपरागत मुस्लिम परिवार है, जिसमें महरूख के पिता प्रगतिशील विचारधारा के व्यक्ति हैं । बेटी की शादी और शिक्षा में वे शिक्षा को महत्त्वपूर्ण समझते हैं । अपनी बेटी की उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने परिवारवालों के विरोध को नजरअंदाज करते हुए महरूख को रफत के साथ दिल्ली जाने की मंजूरी दी । पिता ने महरूख की काबिलियत को समझ कर उसके लिए गए निर्णयों में कभी भी हस्तक्षेप नहीं किया, जिसके फलस्वरूप वह आगे चलकर सारे खानदान और समाज के लिए मिसाल बनी । वह जीवन में अपने पिता और पति की पहचान से अलग अपनी खुद की पहचान बनाने में सक्षम रहती है । इस उपन्यास में लछमिनियाँ, डॉ॰ विमला आदि स्त्री पात्र एवं रफत, अरोड़ा, इसरत, संजय, गणपत काका, सलमान साहब, रवि, अमजद आदि पुरूष पात्र हैं ।

नासिरा शर्मा का चौथा उपन्यास **'जिन्दा मुहावरे'** का मुख्य पात्र निजाम है । यह उपन्यास भारत और पाकिस्तान के बंटवारे पर आधारित है । निजाम विभाजन के बाद पाकिस्तान जाकर बस गया, परन्तु उसका पूरा परिवार हिंन्दुस्तान में ही रह गया । उपन्यास का एक परिवेश जहाँ परम्परावादी मुस्लिम परिवार का है, तो वहीं दूसरी ओर नये-नये पाँव पसारते पाकिस्तान का है । एक ओर अपनी जड़ों से जुड़ कर रहने के लिए जहाँ अपना सब कुछ कुर्बान करने की भावना है, तो वहीं दूसरी ओर नवीनता की तलाश में उपजे संघर्षों की दास्तान है । इस उपन्यास में रजिया, शमीमा, सुन्दर काकी, सुगरा, सबीहा, सालेहा आदि स्त्री पात्र एवं रहीमुद्दीन, इमाम, गोलू आदि पुरूष पात्र हैं ।

नासिरा शर्मा का पांचवा उपन्यास **'अक्षयवट'** का मुख्य पात्र जहीर है । उपन्यास का परिवेश इलाहाबाद की मिश्रित गंगा-जमुनी तहजीब वाला है, जहाँ एक ओर पढ़े-लिखे और संभ्रांत लोग हैं जो सिस्टम में आयी खराबी को दूर कर एक अच्छे शहर की स्थापना चाहते हैं, तो दूसरी ओर शासन का वह भ्रष्ट तंत्र है जो अपनी पकड़ ढ़ीली नहीं होने देना चाहता । यह उपन्यास इलाहाबाद शहर के एक भ्रष्ट पुलिस इंस्पेक्टर श्यामलाल त्रिपाठी और छः मित्र जहीर, मुरली, सलमान, बसंत, रमेश और जगन्नाथ के पर केन्द्रित है । सतीश मोजमदार एक ईमानदार पुलिस ऑफिसर है जो भ्रष्ट व्यवस्था को बदलने के लिए निरन्तर प्रयासरत है । इस उपन्यास में सिपतुन, दादी फिरोज जहाँ, हंगामा बी. आदि स्त्री पात्र एवं गंडेरी मामा, जग्गु, झींगुर, आदि पुरूष पात्र हैं ।

नासिरा शर्मा का छठा उपन्यास **'कुइयाँजान'** का मुख्य पात्र डॉ॰ कमाल है । यह उपन्यास जल की कमी की ज्वलंत समस्या पर लिखा गया है । उपन्यास का परिवेश आधुनिक एवं उच्च शिक्षित संभ्रांत मुस्लिम परिवार का है । भविष्य में जल की कमी से जूझने और संभावित खतरों से निजात पाने की व्यवस्था इस उपन्यास की मूल संवेदना है । डॉ॰ कमाल ने जल संरक्षण एवं मानव स्वास्थ्य संरक्षण को अपना जीवन ध्येय बनाया है । इस उपन्यास में खुरशीद आरा, शकर आरा, बुआ, शमीना, सूफिया, राबिया आदि स्त्री पात्र एवं बदलू, पन्ना सुनार, मौलवी साहब, हीरा पहलवान, जमाल खाँ आदि पुरूष पात्र हैं ।

नासिरा शर्मा का सातवां उपन्यास **'जीरो रोड'** का मुख्य पात्र सिद्धार्थ है । उपन्यास का परिवेश दो हिस्सों में बँटा है । एक ओर इलाहाबाद की व्यस्त सड़क ज़ीरो रोड है तो वहीं दूसरी ओर दुबई के चकाचौंध भरे माहौल

में कामकाजी लोगों का जीवन । यह उपन्यास हिन्दू और मुस्लिम समाज के भिन्न-भिन्न परिवेशों को दर्शाते हुए मानव जीवन के संवेदनाओं को उजागार करता है । समाज के कुछ निहित स्वार्थी तत्व अपने क्षुद्र स्वार्थ सिद्धि के लिए हिन्दू और मुसलमानों के बीच नफरत फैलाने और दंगे भड़काने के लिए मासूम नवयुवकों का इस्तेमाल कर उनका भविष्य बर्बाद कर देते हैं । पुनः ऐसे नवयुवकों के लिए वही स्वार्थी तत्व घड़ियाली आँसू बहाकर उनके हितैषी बनने का दिखावा करते हैं । ऐसे नवयुवकों को जब अपनी गलतियों का अहसास होता है तो वे पश्चाताप के आँसुओं में डूब जाते हैं और उनका हृदय परिवर्तन हो जाता है । इस उपन्यास में कविता, राधारानी, पूनम आदि स्त्री पात्र एवं बरकत उस्मान, सुदर्शन घोष, शाह आलम, नन्दन परेरा, रमेश शुक्ला, ईयाद, लाला जगतराम, रामप्रसाद आदि पुरूष पात्र हैं ।

नासिरा शर्मा का आठवां उपन्यास **'पारिजात'** का मुख्य पात्र रोहन है । वह प्रोफेसर माता-पिता की इकलौती संतान है । उपन्यास का परिवेश एक ओर जहाँ इलाहाबाद और लखनऊ का उच्च शिक्षित मध्यम वर्ग है तो वहीं दूसरी ओर अरब देश जहाँ अपने सपनों को पूरा करने की ललक में युवा वर्ग वहाँ का रूख करता है । रोहन भी अपना भविष्य संवारने अरब चला जाता है । वह खुद से बड़ी उम्र की एक अंग्रेज लड़की एलेसन से प्रेम विवाह कर लेता है । परन्तु एलेसन चालाकी से रोहन की सारी संपत्ति अपने नाम करवा कर बेटे पारिजात को साथ लेकर अपने फ्रांसिसी पुरूष मित्र के साथ भाग जाती है । पारिजात की तलाश एवं एलेसन के धोखे से उपजी मानसिक संत्रास, घुटन, अकेलापन और अपमान रोहन की जिन्दगी का हिस्सा बन जाते है । वह अपने बचपन की मित्र रूही जो उसके मित्र काजिम की विधवा थी, की मदद से अपने जीवन संग्राम से जूझकर पुनः व्यवस्थित हो पाता है । इस उपन्यास में शबाना,

फिरदौस जहाँ, प्रभा, मारिया आदि स्त्री पात्र एवं निखिल, प्रहलाद दत्त, वसारत हुसैन, जुल्फिकार अली आदि पुरूष पात्र हैं ।

नासिरा शर्मा का नौवां उपन्यास **'कागज की नाव'** की मुख्य पात्रा महल़का है । यह उपन्यास महलका के पारिवारिक तनाव को केन्द्र में रखकर लिखा गया है । उपन्यास का परिवेश बिहार और ऐसे बिहारी हिन्दू और मुसलमानों का है जो जीविका प्राप्ति के लिए खाड़ी देशों में नौकरी के लिए जाते हैं । यह उपन्यास जिन्दगी की जद्दोजहद के बीच इंसानियत को महत्त्व प्रदान करती है । इस उपन्यास में महजबी, मलकानूर, बिन्दू, सुधा, कान्ता आदि स्त्री पात्र एवं जहूर मियाँ, जाकिर, राशिद, अमजद, नदीम, भोलानाथ, कैलाश, राजेश, कांति झा आदि पुरूष पात्र हैं ।

नासिरा शर्मा का दसवां उपन्यास **'अजनबी जजीरा'** का मुख्य पात्रा समीरा है । इस उपन्यास का परिवेश युद्ध-ग्रस्त इराक का है । युद्ध की विभीषिका और होने वाली हार के बाद की तबाही का मंजर एवं पड़ने वाले दुष्परिणाम उपन्यास का कथ्य है । युद्ध के साथ-साथ इसमें एक अद्भुत प्रेम कहानी है जिसमें घृणा एवं प्रेम का अनूठा संगम है । इस उपन्यास में साजदा, वफा, लैला, सबा, नेहा आदि स्त्री पात्र एवं मार्क, अलबनाही आदि पुरूष पात्र हैं ।

3.2.1 उपन्यासों में वर्णित पात्रों का विद्रोह

'सात नदियां : **एक समन्दर'** उपन्यास में ईरान के इस्लामिक क्रांति का वर्णन है । शाह के शासन में अत्याचार अपनी चरम सीमा पर था । किन्तु जनमानस का विद्रोह जब सैलाब बनकर उमर पड़ा**,** तब उसे संभालने वाला कोई नहीं था । पहले जिस घर और दुकान में शाह की तस्वीर नहीं होती थी उस घर और दुकान पर आक्रमण कर उसे सील कर दिया जाता था किन्तु

अब शाह की उन्हीं तस्वीरों को जला कर राख कर दिया गया । तय्यबा से एक क्रांतिकारी फरीद कहता है, "तय्यबा खानम, क्रांतिकारी कभी थकता नहीं, सुस्ताता नहीं है, उसके सामने उसका भविष्य नहीं है बल्कि आनेवाली नस्ल का है... मुझे देखो, मेरी दोनों बहने कहाँ है, मुझे ज्ञात नहीं है, कब्रिस्तान में सो रही है या जेल में सड़ रही है ? हर रिश्ता एक प्रेम की श्रृंखला में बंधा रहता है ।"[1] **'जिन्दा मुहावरे'** उपन्यास का पात्र निजाम जब पाकिस्तान से हिन्दुस्तान आनेवाला था । ठीक उसी रात पुलिस रहीमुद्दीन के घर की तलाशी लेने गई । पुलिस के पूछने पर कि निजाम वहाँ क्यों गया था ? रहीमुद्दीन ने उबलते हुए कहा - "ई मारे गवा रहा कि आजादी के मतवाले पाकिस्तान बनाए दीन रहा । दिल काटकर रख दिहिन । यही तो हम पूछत है हन कि सरकार अगर बटबारा ना कराती, तो कउन ससुरा वहाँ जात ?"[2] **'अजनबी जज़ीरा'** उपन्यास में समीना आए दिन की घटनाओं से बचने के लिए घर के दरवाजे एवं खिड़कियों को बंद कर रखती थी, ताकि उसकी बेटियाँ घर में सुरक्षित रह सके । बच्चे बीमार थे । घर में घुटन और बदबू का साम्राज्य था । सबा के दरवाजा खोलने की बात पर समीरा ने उसे थोड़ा अंधेरा हो जाने तक इंतजार करने को कहा । सबा ने विद्रोहात्मक स्वर में कहा, "क्यों डरती हो उम्मी तुम ? क्या हो जाएगा ? इतना ही तो न कि वह भेड़िया हमें आकर खा लेगा, तो क्या ? मुझे यह जिन्दगी मर-मर कर जीना अच्छा नहीं लगता.... बिलकुल नहीं भाता, आखिर इस तरह हमें बचाते-बचाते कहीं एक दिन हमें खो न दो तुम !"[3]

---

1. शर्मा, ना. *सात नदियां : एक समन्दर*. पृ. 75.
2.शर्मा, ना. *जिन्दा मुहावरे*. पृ. 62.
3.शर्मा, ना. *अजनबी जजीरा*. पृ. 57.

3.2.2 उपन्यासों में वर्णित सामाजिक परिवर्तन के विविध रूप

'सात नदियां : एक समंदर' उपन्यास ईरान की क्रांति कथा है । शाह के शासनकाल के अत्याचारों से तंग आकर राजनीतिक परिवर्तन के लिए ईरान की महिलायें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है । किन्तु खुमैनी के शासन में आने के बाद महिलाओं पर शोषण और अत्याचार बढ़ जाता है । धार्मिक उन्माद और कट्टरपन को बढ़ावा मिलता है । इस शासन से मुक्ति के लिए तय्यबा और उसके साथी संघर्ष करते हैं । तय्यबा का संघर्ष और त्याग अद्‌वितीय है । **'शाल्मली'** उपन्यास की मुख्य पात्रा शाल्मली अपने प्रगतिशील विचारधारा एवं परिश्रम के कारण एक सक्षम एवं ईमानदार प्रशासनिक अधिकारी बन जाती है । उसका क्लर्क पति धीरे-धीरे हीन भावना का शिकार होकर उसके ऊपर अत्याचार करता है । उसका दाम्पत्य जीवन बिखर जाता है । फिर भी शाल्मली कहती है, "मेरे मन मस्तिष्क में एक ऐसे समाज की कल्पना है, जहाँ कोई किसी का दास नहीं है । मैं पुरुष विरोधी न होकर अत्याचार विरोधी हूँ । अत्याचारी का कोई नाम और धर्म नहीं होता है, तो भी समूह या इकाई में हमारे सामने होता है ।"[1] **'अक्षयवट'** उपन्यास का मुख्य पात्र जहीर एवं उसके अन्य मित्र समाज में व्याप्त भ्रष्टाचारों और पुलिसिया अत्याचारों से पीड़ित असहाय एवं निरपराध लोगों को बचाने का भरसक प्रयास करते है । विषम परिस्थितियों के बाद भी जहीर अपनी पढ़ाई जारी रख कॉलेज का प्राध्यापक बन जाता है । वह असहाय और बेसहारा बच्चों के लिए 'मुस्कान' नामक संस्था स्थापित कर समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है ।

---

1. शर्मा, ना. *शाल्मली*. पृ. 101.

3.2.3 उपन्यासों में वर्णित जीवन की वास्तविकता और जीवन मूल्य

'सात नदियां : एक समन्दर' उपन्यास के एक पात्र सूसन के पति को ईरान में इस्लामिक क्रांति के बाद इस्लामिक अदालत का जज बना दिया जाता है । जजों का वास्तविक चरित्र उनके इन वाक्यों से उजागर होता है - "हम तो ठहरे नौकरी पेशा लोग, हमारा काम है व्यवस्था को मजबूत करना । वह कहती है, शराब हराम है, हम कहते हैं एकदम हराम है, मगर दिल में कहते हैं तुम पर हलाल है और पीते हैं । सरकार कहती है, फांसी पर चढ़ा दो तिरयक पीने वालों को, हम कागज पर हस्ताक्षर कर देते हैं ।हमारा गुनाह क्या है ?"[1] उनके अनुसार जो लोग कल शाह की सरकार की शोभा बढ़ा रहे थे, वही आज इस सरकार में है तो फर्क कहाँ से आएगा ? **'जिन्दा मुहावरे'** उपन्यास का निजाम बंटबारे के बाद अपने सुनहरे भविष्य एवं शांतिपूर्ण जीवन के लिए पाकिस्तान चला जाता है । किन्तु जब करांची में आए दिन बम धमाके, गोली और कत्ल आम बात हो गई तब वह अपने बच्चों के भविष्य को लेकर चिंतित हो उठा । वह कहता है, "यहाँ से भागकर कहाँ जाउँ, या रब !" [3] **'जीरो रोड'** उपन्यास में सिद्धार्थ कहता है, "आदमी का काम आदमी से चलता है न कि धर्म और उन्माद से ।"[4] **'अक्षयवट'** उपन्यास में लेखिका के अनुसार रावण के पुतले में आग लगा कर बुराई को हमेशा के लिए मिटा देना सभी चाहते हैं परंतु व्यावहारिक रुप से मर्यादा पुरुषोत्तम राम बनने की चाहत किसी में नहीं होती । आज के दौर में त्याग करने के लिए कोई भी व्यक्ति तैयार नहीं

---

1. शर्मा, ना. *सात नदियां : एक समन्दर.* पृ. 76
2. शर्मा, ना. *जिन्दा मुहावरे.* पृ. 88.
3. शर्मा, ना. *जीरो रोड.* पृ. 58.

होता बल्कि अपने स्वार्थ के लिए उल्टे-सीधे तरीकों से धन कमाने की लालसा में लिप्त रहता है । "रावण को नकारते हुए भी रावण कृत्य अपनाने की छुपी लालसा, आज का सबसे कड़वा यथार्थ था ।"[1] **'अजनबी जज़ीरा'** उपन्यास में इराक पर विदेशी आक्रमण के बाद एक विवश एवं विधवा माँ समीरा का कथन "जिस समाज में जवान माँ पर नजरें गड़ी हो वहाँ कमसिन लड़कियों की क्या सुरक्षा है ?"[2] **'जिन्दा मुहावरे'** उपन्यास का पात्र गयासुद्दीन ने अपने चचा के पाकिस्तान जाने का गम झेला था, पूरे घर को भावनात्मक धरातल पर डगमगाते देखा था । वह पढ़-लिख कर कलक्टर बनता है । कलक्टर बनने के बाद वह जिन्दगी भर अपने मूल्यों पर चलता है । सही ढ़ंग से काम समय पर समाप्त करना एवं सच्चाई को ध्यान में रखकर मुनासिब फैसला करना उसका उसूल था । **'सात नदियां : एक समन्दर'** उपन्यास की पात्रा तय्यबा एक क्रांतिकारिणी है । उसका चरित्र अत्यंत ही प्राणवान है । अपने मूल्यों को बचाने के क्रम में उसे बिजली के झटके, केबिल की मार, तिरस्कार, अपमान और बलात्कार का शिकार होना पड़ा । अपने सिद्धान्तों और मूल्यों से उसने कभी समझौता नहीं किया । अंततः उसे गोली मार दी गई । **'अक्षयवट'** उपन्यास का पात्र जहीर समाज का एक आदर्श पुरुष है । उसके व्यक्तित्व एवं व्यवहार में आकर्षण है । वह बेरोजगार नवयुवकों का संगठन बना कर बुद्धिमानी से समाज एवं प्रशासन में व्याप्त भ्रष्ट आचरण वाले लोगों से बचाने का प्रयास करता है । विषम परिस्थितियों में धैर्य धारण कर वह आगे बढ़ता है ।

---

1. शर्मा, ना. *अक्षयवट.* पृ. 24
2. शर्मा, ना. *अजनबी जज़ीरा.* पृ. 52

अंत में वह एक कॉलेज का प्राध्यापक बन अपनी योग्यता का परिचय भी देता है । गरीब, असहाय, लाचार और विवश बच्चों के लिए एक संस्था 'मुस्कान' स्थापित कर वह अपने सामाजिक दायित्वों को पूरा करता है । इसके लिए वह दिलोजान से चाहने वाली अपनी प्रेमिका को भी त्याग देता है ।

'कुइयांजान' उपन्यास का पात्र बदलू अनाथ है । उसका लालन-पालन मौलवी साहब करते हैं । किन्तु उनकी मृत्यु के बाद उसे खाने के भी लाले पड़ गए । वह खुरशीदआरा के यहाँ नौकरी करता है । तनख्वाह के पैसे से वह जानवरों को पानी पिलाने के लिए पेड़ के पास एक हौदा खरीदकर रख देता है । उपन्यास के प्रमुख पात्र डॉ॰ कमाल एक चरित्रवान युवक है । काफी संघर्षों के बाद वह गरीबों का मुफ्त इलाज एवं उनकी दवा का भी इंतजाम करता है । **'ठीकरे की मंगनी'** में महरुख के पिताजी, दादाजी, गनपत काका जैसे लोग किसी भी महिला की इज्जत को अपनी इज्जत समझते है एवं उनका सम्मान अक्षुण्ण रखने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते हैं । रुढ़िवादी मुस्लिम समाज में भी ऐसे भले लोग है जिन्हें अपनी बेटी से काफी प्यार रहता है । वे उनकी उन्नति के लिए अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं ।

3.2.4 उपन्यासों में वर्णित अधिकारोन्मुख विचार

'सात नदियां : एक समन्दर' उपन्यास की मुख्य पात्रा तय्यबा एवं उसके साथी अपने अधिकारों की रक्षा के लिए खुमैनी द्वारा स्थापित शासन का विरोध करते हैं, जहाँ धार्मिक कट्टरपन एवं उन्माद है । जिसके कारण तय्यबा को शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित कर गोली मार दी जाती है । **'जिन्दा मुहावरे'** उपन्यास का मुख्य पात्र निजाम देश विभाजन के बाद पाकिस्तान जाने का निर्णय लेता है । उसका बड़ा भाई इमाम उससे कहता है कि पाकिस्तान जाने

की भूल मत करो । जब देश से जमींदारी-प्रथा खत्म हो रही है तो जमीन सबकी छिनेगी चाहे हम हो या कोई और । "पढ़-लिख कर नादान मत बनो । बंटबारा मुल्क का हुआ है, हमारे इस गाँव का तो नहीं ?"[1] **'अक्षयवट'** उपन्यास में इंस्पेक्टर त्रिपाठी अपने अपराधिक गतिविधियों के कारण जब सस्पेंड हो गया था, उसी दौरान एक दिन बुरी नीयत से हंगामा के घर चला जाता है । हंगामा की मझली बेटी ने घूरते हुए त्रिपाठी को कड़ककर कहा - "गेट अप ऐण्ड गेट आउट.... अदरवाइज आई विल फोन टू आईजी.... हाउ डेयर यू इण्टर माई हाउज लाइक दिस..... गेट अप.... ।"[2]

'अजनबी जज़ीरा' उपन्यास में फौजी अधिकारी मार्क के कुछ प्रश्न पूछने पर समीरा गुस्से में कहती है, "तैयार हूँ, मारो गोली लेकिन इतना जान लो तुम जो कर रहे हो वह किसी भी तहजीब याफ्ता कौम के लिए वाइसे शर्म है ।"[3]

3.2.5 उपन्यासों में वर्णित ऐतिहासिकता एवं राष्ट्रीयता

नासिरा शर्मा के अधिकांश उपन्यासों में ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय विचारों का समावेश है । **'सात नदियां : एक समन्दर'** उपन्यास में इस्लामिक क्रांति के दौरान उपन्यास का एक पात्र कहता है - "क्या हो गया है हम ईरानियों को ? वह आदर, वह भावना, वह विचार, वह दर्शन, वह इरफानी प्रेम, सब कहाँ गुम हो गया है जिसके लिए ईरानी धरती प्रसिद्ध थी ।"[4] **'जिन्दा मुहावरे'** उपन्यास में लेखिका के अनुसार "गुजरा कल हर इंसान पर भारी पड़ता है । उससे

---

1. शर्मा, ना. *जिन्दा मुहावरे*. पृ. 10.
2. शर्मा, ना. *अक्षयवट*. पृ. 24.
3. शर्मा, ना. *अजनबी जज़ीरा*. पृ. 52
4. शर्मा, ना. *सात नदिया : एक समन्दर*. पृ. 92.

जान छुड़ाना बहुत मुश्किल है और इस मौजूदा हकीकत से इनकार गद्दारी है ।"[1] **'अक्षयवट'** उपन्यास में लेखिका ने इलाहाबाद शहर के ऐतिहासिक एवं महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन कर यहाँ के साम्प्रदायिक एकता की भी बात की है । विजयादशमी का पर्व पूरे भारत में मनाया जाता है किन्तु जो एकता इलाहाबाद में दिखती है वह और कहीं नहीं । इसी एकता को तोड़ने में और धर्म को दो भागों में बाँटने की अंग्रेजों ने बड़ी कोशिश की थी । उनकी कोशिश ने कुछ सालों तक दशहरा बंद करवाने में सफलता तो जरूर हासिल की, मगर शहर की सांस्कृतिक एकता को तोड़ने में कामयाब नहीं हो पायी । **'जीरो रोड'** उपन्यास के पात्र बरकत के अनुसार "पुरानी चीजों से ही तो नई बातों का संदर्भ पता चलता है । बिना तारीख के आप तहजीब व तमद्दुन को क्या ख़ाक समझेंगे ।"[2] **'सात नदियां : एक समन्दर'** उपन्यास की मुख्य पात्रा तय्यबा भविष्य पढ़नेवाली फालगीरन से कहती है - "नहीं, ये रेखाऐं मेरे भाग्य की नहीं है । यह ईरान का चित्र है जो मेरे हाथ में है ।"[3] राष्ट्रवाद की सटीक व्याख्या करते हुए तय्यबा कहती है- "जो व्यवस्था इन्सानियत की दुश्मन हो, उससे मेरा कोई संबंध नहीं है । मदद दोस्तों की जाती है ।"[4] **'जिन्दा मुहावरे'** उपन्यास के पात्र सैफुल्लाह से जब निजाम अपने बेटे अख्तर के लिए उसकी बेटी का हाथ मांगता है तो सैफुल्लाह तल्ख लहजे में कहता है कि कौन अपनी बेटी की शादी नेपाल, अफगानिस्तान और ईरान में करता है ? फिर पाकिस्तान में क्यों ?

---

1. शर्मा, ना. *जिन्दा मुहावरे.* पृ. 56.
2. शर्मा, ना. *जीरो रोड.* पृ. 133.
3. शर्मा, ना. *सात नदियां : एक समन्दर.* पृ. 10.
4. शर्मा, ना. *सात नदियां : एक समन्दर.* पृ. 272.

मिट्टी की किस्म ही इन्सान को इन्सान से बाँधती है, भले ही उसकी हमदर्दी जापानी, चीनी, अफ्रीकी किसी भी इन्सान से हो । **'जीरो रोड'** उपन्यास में कई महत्त्वपूर्ण फिल्मों की चर्चा की गई है, जैसे- 'दी लायन ऑफ अरेबिया' । इसमें इटली एवं अरब कबीलों के बीच घमासान युद्ध का दृश्य है । युद्ध का निर्णय स्थानीय लोगों के हक में होता है । वे लोग अपना इलाका विदेशी प्रभाव से आजाद कराने में कामयाब हो गए ।

3.2.6 उपन्यासों में वर्णित मानवीय चेतना एवं वैचारिकता

'सात नदियां : **एक समन्दर'** उपन्यास में तय्यबा अपने दोस्तों को इश्क पर संवेदनशील होकर कहती है कि अगर इश्क ही सब कुछ होता तो फिर यह रोज की घटनायें, तलाक, कत्ल, धोखा, बेवफाई, आत्महत्या इत्यादि सब खत्म हो जाती । "इश्क एक तयशुदा अनुबंध का नाम है जो कुछ समय बाद ही टूटने लगता है ।"[2] सूसन को उसके पति ने तलाक दे दिया । वह भीतर से टूट चुकी थी । वह आत्म विश्लेषण कर निष्कर्ष पर पहुँचती है कि आखिर उसकी गलती क्या है जो अपने जीवन की आहुति दे दे ? और उसका आशिक तो नहीं मरा जो उसकी याद में सारा जीवन गुजार दे ? सीढ़ी का यदि एक जीना टूटा हुआ हो तो क्या सीढ़ी नहीं चढ़नी चाहिए ? उस जीने को छोड़कर भी तो ऊपरी मंजिल तक पहुँचा जा सकता है ? "एक टूटा जीना इतना महत्त्वपूर्ण तो जीवन की सीढ़ी में नहीं होना चाहिए ।"[3] **'जिन्दा मुहावरे'** उपन्यास में गयासुद्दीन के बेटे मजहर ने अपना नाम बदलकर ऐसा नाम रखने की इच्छा जाहिर की ताकि उसकी पहचान का पता नहीं चले । गयासुद्दीन ने जबाब दिया -"इस मुल्क में

---

1. शर्मा, ना. जिन्दा मुहावरे. पृ. 124.
2. शर्मा, ना. *सात नदिया : एक समन्दर.* पृ. 59.
3. शर्मा, ना. *सात नदिया : एक समन्दर.* पृ. 59.

रहना है तो 'शॉक प्रूफ' बनकर रहना पड़ेगा, छुई-मुई का पौधा नहीं ।"[1] यहाँ तरह-तरह की समस्यायें हैं । गरीबी, प्रतिस्पर्धा, गंदी राजनीति और निहित स्वार्थ की भीड़ में किसी ने नॉर्मल रहने का ठेका नहीं ले रखा है । **'अक्षयवट'** उपन्यास के पात्र प्रो॰ कौशल के अनुसार ईमानदारी की उम्मीद तो प्रत्येक व्यक्ति से कर सकते है मगर कुछ प्रोफेशन नोबल प्रोफेशन है जिनसे हमारी उम्मीद कुछ ज्यादा बंधती है । जैसे टीचिंग, डाक्टरी, कुछ अर्थों में पुलिस विभाग आदि । अगर हम अपने कर्त्तव्यों को पूरा नहीं करते तो नेता और गुंडों से क्या उम्मीद पालें ? **'अज़नबी जज़ीरा'** उपन्यास में लेखिका कहती है - "भूख का मजा जिसने चखा हो वह उसकी जलन को समझ सकता है कि खाली आंते दर्द से कैसे ऐंठती है ।"[2]

3.2.7 उपन्यासों में वर्णित आदर्श एवं यथार्थ का समन्वय

'सात नदियां : एक समन्दर' उपन्यास की मुख्य पात्रा तय्यबा के सारे दोस्त फालगीरन से अपना भविष्य जानने के लिए काफी बेचैन थे । तय्यबा सभी से कहती है कि यदि भाग्य हाथ की रेखाओं में लिखा होता तो संसार में कोई दुःखी भी नहीं रहता, सभी अपनी भाग्य की रेखाओं को पढ़कर अपनी किस्मत बदल लेते। **'जिन्दा मुहावरे'** उपन्यास में निजाम के पाकिस्तान चले जाने से परिवार की सभी लोग मर्माहत हो गए । बड़ा भाई इमाम उसके इंतजार में बहन रज्जो की शादी टालता रहा । अंत में एक दिन उसके पिता रहीमुद्दीन ने उसे गले लगाते हुए प्यार से कहा कि जो गुजर गया उसे भूल जाओ और आने वाले समय के बारे में सोचो ।

---

1. शर्मा, ना. *जिन्दा मुहावरे.* पृ. 106.
2. शर्मा, ना. *अजनबी जजीरा* पृ. 130.

'अजनबी जज़ीरा' उपन्यास की पात्रा समीरा को उसकी चची कहती है कि माहौल के अनुसार हमारे फैसले होते हैं जो माहौल के बदलते ही खुद भी बदल जाते हैं । अभी जैसे भी हो इस बारुदी जमीन से निकलने का प्रयास करो क्योंकि यह जमीन हमारी दफनगाह बन रही है। जितने इराकी बच सकें उन्हें बचाना हमारा फर्ज है । बाद में किसने किसको छोड़ा उससे क्या फर्क पड़ता है । प्यार अभी है, कल नहीं है तो रोना क्यों, इन वर्षों में हमलोगों ने बहुत कुछ खोया है इसलिए पाने के हकदार भी हम हीं है । इस मौके को किसी भी हाल में हाथ से मत जाने दो । **'अक्षयवट'** उपन्यास में जहीर की दादी बचपन से ही उसे समझाती थी - "किताबें सबसे अच्छी दोस्त होती है । उनसे दिल लगाओ ।"[1]

3.2.8 उपन्यासों में वर्णित वैश्विकता

'सात नदियां : एक समन्दर' उपन्यास की पात्रा मलीहा अपने पति के बारे में कहती है कि एक इन्सान केवल बेटा, पति और पिता ही नहीं बल्कि एक देशभक्त, मानवता का पुजारी और स्वतन्त्रता का प्रेमी भी हो सकता है । 'जिन्दा मुहावरे' उपन्यास के पात्र इमाम पाकिस्तान का जिक्र होने पर जावेद से कहता है - "वह सब ठीक है, मगर याद रखो, इस बँटवारे के बोझ से हमारी पीढ़ी आजाद नहीं हो सकती । भले ही तुम जैसे लोगों के लिए भूल जानेवाली बात हो, मगर हम जैसों के लिए ऐसी लानत है जो चाहकर भी भुला नहीं सकते जैसे मैं.... मैं सिर्फ मुल्क और समाज से नहीं, बल्कि अपने आप से भी जबाब तलब करता हूँ कि यह सब क्यों और कैसे हुआ ? हमनें ऐसा क्यों

---

1. शर्मा, ना. *अक्षयवट*. पृ. 197.

होने दिया ? इसी सवाल ने हमारे आगे के रास्ते में काँटे बो दिए हैं । उस कंटीली बाड़ को पारकर हम करांची जाने के बारे में सोच नहीं सकते ।"[1] 'अजनबी जज़ीरा' उपन्यास के पात्र समीरा के अपने आप को एशियाई लोग कहने पर मार्क कहता है - "अपने को यूँ न बाँटो ! हम इन्सान हैं, हम सब एक तरह से सोचते हैं । जो अलग तरह से सोचते हैं वह तुम्हारे यहाँ भी है और हमारे यहाँ भी । इन्सानी रिश्ते इन सबसे ऊपर होते हैं, वे छोटे-छोटे कारावासों में अपने को बंद नहीं रखते हैं ।"[2]

अतः हम पाते हैं कि हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में उपयुक्त पात्र एवं परिवेश के चयन, पात्रों के विभिन्न रूप, सामाजिक परिवर्त्तन के विविध रूप, जीवन की वास्तविकता, उपन्यासों में वर्णित ऐतिहासिकता एवं राष्ट्रीयता, मानवीय आदर्श जैसे विचारों को कुशलता पूर्वक समाहित किया गया है, जिससे उपन्यासों का कथ्य-पक्ष सुस्पष्ट हो पाया है ।

---

1. शर्मा, ना. *जिन्दा मुहावरे*. पृ. 49
2. शर्मा, ना. *अजनबी जजीरा* पृ. 130.

3.2.8 संदर्भ ग्रंथ

उपन्यास

परवेज, मेहरुन्निसा (१९६९). *आँखों की दहलीज.* अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (१९७२). *उसका घर.* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (१९७७). *कोरजा*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (१९८१). *अकेला पलाश*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (२००२). *समरांगण*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (२००४). *पासंग*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९८४). *सात नदिया: एक समन्दर*. अभिव्यंजना प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९८७). *शाल्मली*. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९८७). *ठीकरे की मंगनी*. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९९३). *जिन्दा मुहावरे*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२००३). *अक्षयवट*. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२००५). *कुंइयाजान*. सामयिक प्रकाशन,. नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२००८). *जीरो रोड*. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२०११). *पारिजात*. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२०१२). *अजनबी जजीरा*. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.

शर्मा, नासिरा (२०१४). *कागज की नाव* . किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

******